



आवेदन-पत्र

भारत स्वाभिमान (न्यास)

मुख्यालय : पतंजलि योगपीठ, महर्षि दयानन्द ग्राम, बहादुराबाद, हरिद्वार-249 402, उत्तराखण्ड, भारत
दूरभाष : 01334-244107, 240008, 246737 फैक्स : 01334-2448 05, 240664

विशिष्ट सदस्य

(दान-1100/-रुपये)

कार्यकर्ता सदस्य

(दान-51/-रुपये)

अपना नवीनतम
पासपोर्ट साइज
फोटो यहाँ
चिपकाएं

प्रकोष्ठ

आई.डी. नं

(मुख्यालय द्वारा भरा जायेगा)

- आवेदक का नाम
- पिता/पति का नाम
- जन्म-तिथि
- आयु
- लिंग—पुरुष () स्त्री ()
- वजन
- पता
- ब्लॉक
- तहसील
- जिला
- राज्य
- पिन-कोड
- दूरभाष/मोबाइल नं० (आवास)
- (कार्यालय)
- ई-मेल आई.डी.
- शैक्षणिक योग्यता
- मासिक आय
- वर्तमान व्यवसाय/नौकरी या अन्य सेवा कार्य
- यदि आप योग-शिक्षक हैं तो अपना आई.डी. नं० अथवा रसीद नं० दिनांक सहित लिखें
- क्या आपने भारत स्वाभिमान की सदस्यता हेतु दान प्रदान कर दिया है यदि हाँ तो दान का विवरण :
- झाफ्ट-संख्या
- दिनांक
- राशि
- बैंक का नाम
- भारत स्वाभिमान (न्यास) की रसीद संख्या
- नगद राशि
- राशि एवं आवेदन-पत्र प्राप्तकर्ता का नाम
- उनका शिक्षक आई.डी. नं.
- मैं, अपने समय में से 10 प्रतिशत समय इस संगठन के विस्तार हेतु देने को प्रतिबद्ध हूँ— हाँ नहीं
- मैं, सप्त-सिद्धान्तों एवं सप्त-मर्यादाओं का 100 प्रतिशत पालन करूँगा— हाँ नहीं
- मैं, अपनी आय में से राष्ट्र के नव-निर्माण के लिये 1 से 10 प्रतिशत आर्थिक सहयोग करूँगा— हाँ नहीं
- आप भारत स्वाभिमान के किस संगठन (प्रकोष्ठ) के साथ जुड़ना चाहते हैं ?

शपथ

आवेदक के हस्ताक्षर

मैंने सप्त-सिद्धान्तों, सप्त-मर्यादाओं, पाँच-संकल्पों, पाँच-प्रतिज्ञाओं एवं जीवन दर्शन में वर्णित संक्षिप्त-लक्ष्य, दर्शन एवं सिद्धान्त का अध्ययन कर लिया है। मैं इनसे सहमत हूँ एवं मैं शपथ लेता हूँ कि भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट) के उद्देश्यों व नियमों का पूर्णतः पालन करूँगा।

आवेदक के हस्ताक्षर

हमारा ध्येय : एक वाक्य में भारत स्वाभिमान आन्दोलन की व्याख्या करें तो योग से आरोग्य देकर देशवासियों के तन की रक्षा करेंगे तथा जाति, मजहब, प्रान्त एवं भाषाओं की सर्कीणताओं में बंटे हुये राष्ट्र को योग से संगठित करके जनशक्ति का राजशक्ति पर नैतिक नियन्त्रण एवं अंकुश रखकर वतन की रक्षा करेंगे और लोकसत्ता से राजसत्ता को देशहित में स्वदेशी नीतियों व व्यवस्थाओं को लागू करवाने के लिए बाध्य करेंगे। हम आधी-अधूरी आजादी के स्थान पर सम्पूर्ण आजादी प्राप्त करने का संकल्प लेंगे।

विशेष : ध्यान देने योग्य बातें—

1. आवेदक स्वस्थ, समर्पित, समर्थ एवं शिक्षित होने के साथ सप्त-सिद्धान्तों, सप्त-मर्यादाओं एवं पाँच-प्रतिज्ञाओं का पूर्णतः पालन करने वाला होना चाहिए। 2. आप यह पत्रक स्थानीय पतंजलि योग समिति के जिला कार्यालय या पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार, मुख्यालय में जमा करवा सकते हैं। 3. विशिष्ट सदस्य बनने हेतु पंजीकरण दान-भारत स्वाभिमान के विशिष्ट-सदस्य बनने हेतु द्विवार्षिक सदस्यता पंजीकरण दान 1100/- रुपये निर्धारित किया गया है। 4. झाफ्ट-भारत स्वाभिमान (न्यास) के नाम पर बनवाये जो हरिद्वार में देय हो एवं झाफ्ट के पीछे अपना नाम, पता व फोन नं० अवश्य लिखें। 5. कार्यकर्ता सदस्य बनने हेतु पंजीकरण दान मात्र 51 रुपये प्रतिवर्ष है, जिसकी (भारत स्वाभिमान न्यास) की रसीद आप जिला स्तरीय पतंजलि योग समिति के पदाधिकारी अथवा कार्यालय से ले सकते हैं।

भारत-स्वाभिमान (स्वरूप, योजना, उद्देश्य एवं संक्षिप्त नियमावली)

७ भारत स्वाभिमान आन्दोलन की मुख्य 9 नीतियाँ एवं उद्देश्य ७

(1) स्वदेशी चिकित्सा व्यवस्था। (2) स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था। (3) स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था। (4) स्वदेशी न्याय व कर व्यवस्था। (5) भारतीय संस्कृति की रक्षा। (6) भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, महंगाई व भूखमुक्त वैभवशाली भारत का निर्माण। (7) ग्रामीण स्वावलम्बन। (8) पर्यावरण की रक्षा व स्वच्छता। (9) नियन्त्रित जनसंख्या।

अपने प्राणों की आहुति देकर माँ भारती के जिन अमर शहीदों ने देश को आजादी दिलवाई तथा हमारे पूर्वज महापुरुषों ने एक स्वर्णिम भारत का सपना देखा था। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद तो हो गया, सत्ता परिवर्तन भी हो गया परन्तु आजादी के 63 वर्ष बाद भी आज अंग्रेजों की बनाई हुई नीतियों व व्यवस्थाओं को हम निर्लेज्जता के साथ आत्मग्लानि के कारण ढोते जा रहे हैं। अंग्रेजों के जो कानून हमें सदियों तक गुलाम बनाने के लिए, हमारा शोषण करने के लिए हम पर अत्याचार करने व हमें लूटने के लिए बनाये थे, वे लगभग ज्यों के त्यों आज भी लागू हैं। अंग्रेजों की बनाई शिक्षा नीति, चिकित्सा-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, व्यापार-नीति व कर-व्यवस्था आदि को हमने लगभग ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया है। अंग्रेजों की नीतियों व व्यवस्थाएँ यदि ठीक थी तो फिर देश के लाखों-करोड़ों लोगों ने अपने बलिदान क्यों दिए थे? हमारे सभी क्रान्तिकारी शहीद व महापुरुष देश में सम्पूर्ण आजादी चाहते थे। अंग्रेजों द्वारा बनाई गई तमाम शोषणकारी व षडयन्त्रकारी नीतियों व व्यवस्थाओं को बदल कर पूर्ण स्वदेशी शासन व स्वदेशी नीतियाँ चाहते हैं। महात्मा गाँधी के शब्दों में "हिन्द स्वराज" माने ग्राम स्वराज, आध्यात्मिक स्वराज चाहते थे। उन्हीं वीरों, क्रान्तिकारियों व राष्ट्रवादी महापुरुषों के सपनों का भारत बनाने का काम कर रहा है "भारत स्वाभिमान"।

भारत स्वाभिमान की मुख्य नौ नीतियों को पूर्ण करने के लिए हमने पंचसूत्रीय कार्यक्रम तय किया है-

1. भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, आतंकवादी, खाद्य पदार्थों में जानलेवा भयंकर मिलावट करने वालों तथा जहरीला रासायनिक प्रदूषण फैलाने वाले असुर भ्रष्ट व बेईमान लोगों को मृत्युदण्ड की सजा का कानून बनाना चाहिए तथा इसके लिए राज्य व केन्द्र स्तर पर पृथक से 'फास्ट टैक' न्यायालयों की स्थापना हो जहाँ प्रतिदिन सुनवाई करके इन अपराधियों को तुरन्त दण्डित किया जा सके।
2. तीन प्रतिशत अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों ने देश की विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका से लेकर देश की नीति निर्धारण व समस्त व्यवस्थाओं के संचालन में एकछत्र निरंकुश एकाधिकार बनाया हुआ है और इससे देश के 97% लोगों के साथ अन्याय हो रहा है। अब देश की समस्त व्यवस्थाएँ राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में संचालित होनी चाहिए। जिस दिन विज्ञान, प्रबन्धन, तकनीकी व अन्य उच्च शिक्षा की व्यवस्था भारतीय भाषाओं में हो जायेगी उस दिन एक गरीब मजदूर व किसान आदि का बेटा भी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आई.ए.एस. व आई.पी.एस. ऑफिसर आदि बन सकेगा तथा देश की नीति-निर्धारण व व्यवस्थाओं के संचालन में जिस दिन देश के आम आदमी की अहं भूमिका होगी तथा देश की नीतियाँ व व्यवस्थाएँ देश के अन्तिम आम आदमी व गाँवों को केन्द्र में रखकर बनायी जाने लगेंगी और उस दिन लोकतन्त्र के नाम पर चल रहा षडयन्त्र व लूटतन्त्र खत्म होगा। इससे प्रत्येक किसान के खेत में पानी, खाद, बिजली व उसके बच्चों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य की श्रेष्ठ सुविधायें प्राप्त हो सकेगी।
3. एम.एल.ए. व एम.पी. आदि देश के जनप्रतिनिधि, चूँकि देश की जनता के अन्तिम आदमी का प्रतिनिधित्व करते हैं, अतः उनको देश के अन्तिम आदमी को जितना वेतन मिलता है (लगभग 3 हजार), उतना ही वेतन लेना चाहिए तथा अपने बच्चों को, देश के अन्तिम आदमी के बच्चे जहाँ पढ़ते हैं वहाँ पढ़ाना चाहिए और देश के अन्तिम आदमी की जहाँ चिकित्सा की जाती है, वही बीमार पड़ने पर अपना अथवा अपने परिजनों का इलाज करना चाहिए। ऐसा होने पर देश के अन्तिम आदमी का आर्थिक विकास स्वतः हो जायेगा तथा देश के सरकारी विद्यालयों व चिकित्सालयों की व्यवस्थाएँ एक दिन में ही सुधर जायेगी। स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था व स्वदेशी चिकित्सा व्यवस्था का हमारा सपना भी साकार हो जायेगा।
4. 64 प्रकार के टैक्स लगाकर देश के आम आदमी को लूटने व टैक्स के कारण महंगाई बढ़ने से आम आदमी को सुख के साधनों से वंचित रखने का षडयन्त्र पूरी तरह खत्म होना चाहिए। अब देश में मात्र 2% ट्रान्जैक्शन टैक्स लगाइए, इससे 18 लाख 20 हजार करोड़ रुपए जुटा कर देश का विकास कीजिए जबकि 64 प्रकार का टैक्स लगाकर वित्तीय वर्ष-2009 व 2010 के अनुसार सरकार कुल राजस्व 6,14,497 करोड़ रुपये ही जुटा पाती है। देश के कुल बजट का 80% देश के विकास में तथा 20% देश की व्यवस्थाओं के संचालन में खर्च होना चाहिए। यही हमारी भारत की प्राचीनकाल की शासन प्रणाली का आदर्श रहा है।
5. भारतीय रिजर्व बैंक को बड़े नोटों की प्रिन्टिंग तुरन्त बन्द कर देनी चाहिए तथा एक आदेश जारी करके बड़े नोटों को एक सुनिश्चित समयवाधि में वापस ले लेना चाहिए। इससे भ्रष्टाचार, काले धन, नकली करेंसी व आतंकवाद की समस्या का भी एक दिन में समाधान हो जायेगा।

आधी-अधूरी आजादी के स्थान पर देश के सम्पूर्ण आजादी लाने के लिए आगे आइए! आप स्वयं भारत स्वाभिमान के आन्दोलन से जुड़िये व औरों को जोड़िये!!
भारत स्वाभिमान के 15 मुख्य संगठन :

1. युवा-संगठन	6. पूर्व-सैनिक-संगठन	11. श्रमिक-संगठन
2. शिक्षक-संगठन	7. किसान-संगठन	12. विज्ञान एवं तकनीकी-संगठन
3. चिकित्सक-संगठन	8. उद्योग एवं वाणिज्य-संगठन	13. कला-संस्कृति-संगठन
4. वित्तीय व्यवसायी-संगठन	9. कर्मचारी-संगठन	14. मीडिया-संगठन
5. अधिवक्ता एवं पूर्व न्यायाधीशों का न्यायविद् संगठन	10. अधिकारी-संगठन	15. वरिष्ठ नागरिक-संगठन

भारत के जन-जन को योगधर्म से स्वधर्म का बोध करवा, उनके तन, मन एवं चित्तन को स्वस्थ करने हेतु तथा वैयक्तिक चरित्र को पवित्र कर राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना **भारत स्वाभिमान का लक्ष्य है**-स्वस्थ, स्वच्छ, समृद्ध तथा स्वावलम्बी, भ्रष्टाचार-मुक्त, बेरोजगारी एवं गरीबी-मुक्त भारत का निर्माण करना, यह हमारी दृढ़ संकल्पना है। एवं इस संकल्पना को पूर्ण करने के लिए-1. दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) 2. पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) भारत व अन्तर्राष्ट्रीय, 3. भारत स्वाभिमान (अप्रवासी भारतीय संगठन), 4. पतंजलि चिकित्सालय, 5. पतंजलि योग समिति एवं 6. महिला पतंजलि योग समिति-ये छः मुख्य संस्थायें कार्य करेंगी तथा समाज के लोगों को उपरोक्त विभिन्न 15 संगठनों के माध्यम से योग क्रांति एवं राष्ट्रीय जन जागरण अभियान से जोड़ेंगी।

छः मुख्य संगठन व 15 सहयोगी संगठन, सब मिलाकर हमारे सम्पूर्ण संगठन के कुल 21 घटक होंगे। ये 21 संगठन, 21वीं शताब्दी में सम्पूर्ण भारत में सम्पूर्ण सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक-उत्थान के आन्दोलन/अनुष्ठान चलाकर, देश में नई आजादी व नई व्यवस्था लाकर, भारत का स्वाभिमान जगायेंगे। आप भारत स्वाभिमान के माध्यम से इस राष्ट्रीय क्रान्ति से जुड़ने के लिए अपने सम्बन्धित संगठन से जुड़ने के लिए स्थानीय पतंजलि योग समिति/पतंजलि चिकित्सालय से सम्पर्क करें एवं हमारे शिक्षक/सदस्य बनने के लिए आगे आये।

भारत स्वाभिमान (न्यास) के विशिष्ट सदस्यों को दी जाने वाली सेवायें :

1. परम पूज्य स्वामी जी महाराज के पावन सान्निध्य में, गैर आवासीय शिविरों में आपके गृह राज्य में अथवा हरिद्वार में योग-धर्म से राष्ट्र-धर्म का तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा तथा उसमें भी कार्यकर्ता एवं सामान्य सदस्यों की अपेक्षा विशिष्ट सदस्यों को प्राथमिकता दी जायेगी।
2. भारत स्वाभिमान परिवार के सभी सदस्यों को पतंजलि योगपीठ से प्रशिक्षित योग प्रशिक्षकों द्वारा सामूहिक साप्ताहिक योग कक्षाओं की निःशुल्क सेवा प्राप्त होगी।
3. भारत स्वाभिमान से जुड़े प्रत्येक परिवार को "एक परिवार-एक उपहार योजना" के अन्तर्गत प्रतिवर्ष आश्रम से साहित्य इत्यादि प्रसाद के रूप में उपहार प्राप्त होगा।
4. भारत स्वाभिमान से जुड़कर आप को एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था पतंजलि योगपीठ के भी विभिन्न प्रकल्पों से बृहद रूप से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

भारत स्वाभिमान (न्यास) के कार्यकर्ता सदस्यों को दी जाने वाली सेवायें :

1. परम पूज्य स्वामी जी महाराज के पावन सान्निध्य में, गैर आवासीय शिविरों में आपके गृह राज्य में अथवा हरिद्वार में निःशुल्क योग प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा एवं उसमें भी कार्यकर्ता सदस्य को सामान्य सदस्यों की अपेक्षा प्राथमिकता दी जायेगी।
2. भारत स्वाभिमान परिवार के सभी सदस्यों को पतंजलि योगपीठ से प्रशिक्षित योग प्रशिक्षकों द्वारा सामूहिक दैनिक व साप्ताहिक योग कक्षाओं की निःशुल्क सेवा प्राप्त होगी।
3. भारत स्वाभिमान से जुड़कर आपको एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था पतंजलि योगपीठ के भी विभिन्न प्रकल्पों से बृहद रूप से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

भारत स्वाभिमान (न्यास) का विशिष्ट/कार्यकर्ता सदस्य बनने वाले आवेदक के लिए आवश्यक संक्षिप्त नियमावली :

1. पतंजलि योगपीठ द्वारा निर्धारित सप्त-सिद्धान्त यथा राष्ट्रवाद, पराक्रमशीलता, पारदर्शिता, दूरदर्शिता, मानवतावाद, अध्यात्मवाद, विनयशीलता और शाकाहारी, निर्व्यसनी, स्वस्थ, समर्थ, समर्पित व गैर-राजनैतिक जीवन, राष्ट्रहित में प्रतिदिन कम से कम एक से दो घण्टे का समय देने के लिए प्रतिबद्ध एवं आदर्शवाद की सप्त-मर्यादाओं को मानने वाला व्यक्ति होना चाहिए, जो राष्ट्रहित में यथा-शक्ति आर्थिक सहयोग करे।
2. भारत स्वाभिमान (न्यास) द्वारा उसके सम्बन्धित संगठन में कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत करते हुए विशिष्ट सदस्य को प्राथमिकता दी जायेगी।
3. सदस्य अपने आत्म-विकास के लिए प्रतिदिन एक घन्टा योग करें तथा सदस्य का सामूहिक साप्ताहिक योग कक्षा एक्म मासिक बैठक व पूज्य स्वामी जी महाराज के कार्यक्रमों में उपस्थित होना अनिवार्य होगा।
4. भारत स्वाभिमान का प्रत्येक सदस्य आंदोलन की मुख्य नौ नीतियों एवं स्वदेशी का पूर्ण अग्रह रखेगा एवं अन्यों को भी राष्ट्रहित में यह प्रतिज्ञायें अंगीकार करने हेतु प्रेरित करेगा।
5. **विशिष्ट सदस्य बनने हेतु पंजीकरण दान**-भारत स्वाभिमान के विशिष्ट-सदस्य बनने हेतु **द्विवार्षिक** सदस्यता पंजीकरण दान 1100/- रुपये निर्धारित किया गया है। ड्राफ्ट "भारत स्वाभिमान (न्यास)" के नाम पर बनवाये जो हरिद्वार में देय हो एवं ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम, पता व फोन नं० अवश्य लिखें। 6. **कार्यकर्ता सदस्य बनने हेतु पंजीकरण दान मात्र 51 रुपये प्रतिवर्ष है**, जिसकी रसीद आप जिला स्तरीय पतंजलि योग समिति के पदाधिकारी अथवा कार्यालय से ले सकते हैं। शिक्षकों के लिए यह छूट दिसम्बर 2010 तक अर्थात् दो वर्षों तक ही होगी।